International Journal Of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.2,Feb. 2013 ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

तकनीकी शब्द निर्माण अनुप्रयोग एवं चुनौतियाँ

निर्मल चकधर

सहायक प्रध्यापक (हिन्दी)
शास.अ.शा.महा. बैहर, बालाघाट (म.प्र.)

सारांश

हिन्दी एक ऐसी समृद्ध भाषा है जिसमें आधुनिकता और प्रगतिशीलता की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की अद्‌भुत सामर्थ्य है। हिन्दी की शब्द संपदा अत्यंत समृद्ध है। उसे जहॉ संस्कृत का सम्बल प्राप्त हैं, वहीं विदेशी शब्दों को आत्मसात करने की शक्ति भी उसमें अपने पूर्ण वैभव के साथ विद्यमान है। हिन्दी शब्द निर्माण का भविष्य अत्यंत उज्जवल है। विश्व में उसके बोलने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। ज्ञान–विज्ञान का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहॉ उसकी पहुॅच न हो। बस आवश्यकता है अपनी मानसिकता को तदनुकूल बनाने की। हिन्दी शब्दावली का प्रचार–प्रसार आज की सबसे बड़ी चुनौती हैं। यह तभी संभव हो सकता हैं जब हम अंग्रेजी भाषा के कारण उपजी हीन–भावना का परित्याग करके राष्ट्र भाषा हिन्दी को व्यवहार में लाऍं। हम लोग हिन्दी को लेकर हीन भावना से ग्रसित हैं। आज ''कम्प्यूटर'' को ''संगणक'' बोलने वालों की संख्या नगण्य है। ''वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग'' अपना कर्तव्य बखूबी निभा रहा है किंतु हम ही हैं कि अंग्रेजी का दामन नहीं छोड़ पा रहे हैं। आज भी हम कम्प्यूटर–इंटरनेट या अन्य डिजीटल माध्यमों में समस्त प्रक्रियाऍं अंग्रेजी में ही संपादित करते दिखते हैं। जब तक हम अपने निजी काम–काज में हिन्दी का प्रयोग नहीं करेगें तब तक हम किसी दूसरे से भी ऐसा करने की उम्मीद नहीं कर सकते। हमें अपने मित्रों, पड़ोसियों और सर्वसाधारण को ऐसा करने की प्रेरणा देनी होगी।

प्रस्तावना

टोकियों विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर डॉ0 सुरेश ऋतुपर्ण ने एक ''सभा'' में कहा था कि सूचना–प्रौद्योगिकी में महारत हासिल करने के लिए जापानी विद्यार्थी भी अंग्रेजी सीखते हैं, लेकिन वे अंग्रेजी के गुलाम नहीं बनते, बल्कि अपनी भाषा, संस्कृति और परम्परा को अधिक महत्व देते हैं।

हिन्दी शब्द निर्माण में संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्ययों का अध्ययन संस्कृत साहित्य में वर्णित और प्रयुक्त संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्ययों के आधार पर ही किया जाता है। भाषा विज्ञान में संधि और समास का अध्ययन रूप स्वनिमी (मार्फोफोनेमिक्स) के अंतर्गत किया जाता हैं। हिन्दी भाषा के समास, संधि, उपसर्ग, प्रत्यय–विभक्ति प्रत्यय और परसर्ग पूर्णतः पृथक हैं। इनका अध्ययन संस्कृत–व्याकरण के नियमों के अनुसार न करके हिन्दी व्याकरण के नियमों के अनुसार करना चाहिए। शब्द निर्माण में इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि शब्द लोक प्रवृत्ति के अनुकूल हो, उनमें संस्कृत शब्दों जैसी क्लिष्टता बिल्कुल न हो। आज हम क्लिष्टता से सुगमता, सहजता और सरलता की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। ऐसे में संस्कृत शब्द निर्माण प्रविधियों का अनुसरण कर यदि हम तकनीकी शब्दावलियों का निर्माण उसी परिपाटी पर करेगें तो यह जनमानस पर समुचित प्रभाव उत्पन्न करने में सहायक नहीं होगा। आज भी अधिकांश भारत गॉवों में बसता है। हम भले ही शहरी क्षेत्रों में बस गये हो किंतु हमारी अस्मिता गॉवों से ही जुड़ी हुई है। इसलिए विभिन्न बोलियों के उटपटांग शब्द भी हमें पराये नहीं लगते, बल्कि हमारे ही बीच के देसी, ठेठ, ठस्के से भरे लगते हैं। हिन्दी क्षेत्र में लोक साहित्य और समाज भाषा विज्ञान को आधार बनाकर बहुत कम शोध कार्य हुए हैं। इन क्षेत्रों से सम्बद्ध शोध कार्य मानक हिन्दी से सम्बद्ध शोधकार्यो की आधारशिला सिद्ध होगें। समाज भाषा विज्ञान और भाषा का समाजशास्त्र भाषा विज्ञान के दो स्वतंत्र आयाम हैं। इन दोनों आयामों पर अमेरिका और ब्रिटेन में सर्वाधिक लेखन और शोध कार्य हुए हैं। अमेरिका और ब्रिटेन विकसित देश हैं। ये एक भाषा–भाषी देश हैं। विकासशील और अविकसित देश बहुभाषा–भाषी हैं। बहुभाषा–भाषी देशों में बहुभाषिकता समस्या उत्पन्न करती है। भारत में यह समस्या विद्यमान है। भाषा नियोजन एवं शब्द नियोजन बहुभाषी देशों की भाषा समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। अतः इस दृष्टि से भी शब्द–निर्माण की युक्ति तलाशना आज के परिवेश में प्रासंगिक होगा।

हिन्दी के प्रख्यात कवि–आलोचक एवं दस्तावेज पत्रिका के सम्पादक डॉ.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का कहना है कि आने वाले समय में भाषा टेक्नोलॉजी में कैद हो जाएगी और दुनिया के तमाम लोग अपनी भाषा खो बैठेंगे। यदि हमारी भाषा सक्षम है तो उसमें जबरिया दूसरी भाषा के शब्दों का घालमेल ठीक नहीं हैं। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति अच्युतानन्द मिश्र का कहना है कि भाषा को लेकर पूरी दुनिया अनेक संघर्षो की गवाह है, किन्तु यह दौर कठिन हैं, जिसमें तमाम भाषाऍं और बोलियॉ लुप्त होने के कगार पर हैं। हमें अपनी भाषा को जानबूझकर भ्रष्ट नहीं बनाना चाहिए।

आज ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे खेल, अणु, तैल, गैस, विद्युत, भू–गर्भ–उद्योग, वन–संरक्षण, पर्यावरण–संरक्षण, वायुयान–जलयान निर्माण, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि पर हिन्दी में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो रहीं हैं। ऐसे में हम कह सकते हैं कि तकनीकी–शब्द निर्माण की दिशा में कुछ तो प्रगति हो रही है। हम आशा करते हैं कि आने वाले समय में इसका क्षेत्र और भी विस्तार पायेगा।

आज विकासशील देशों के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली एक निश्चित आवश्यकता है। देश का सामान्य स्तर ऊॅचा उठाने के लिए, अन्धविश्वास, अज्ञानता को दूर करने के लिए एवं वैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए तकनीकी शब्दावली का निर्माण एवं अनुप्रयोग एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अपनी भाषाओं में भी मौलिक लेखन के लिए शब्दावली निर्माण एक पृष्ठभूमि तैयार करता हैं एवं विकसित होती शब्दावली के अनुचिंतन में भी सहायक होता हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के क्षेत्र में शब्दावलियों के निर्माण में कुछ व्यावहारिक समस्याऍं

Please cite this Article as : *निर्मल चकधर* **,** *तकनीकी शब्द निर्माण अनुप्रयोग एवं चुनौतियॉ* **: International Journal Of Creative Research Thoughts (Feb. ; 2013)**

आती हैं जिनका समाधान परस्पर चर्चा और विचार गोष्ठियों द्वारा किया जा सकता हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में निरंतर विकास के कारण नित्य नये तथ्य प्रकाश में आते रहते हैं। उन्हें समझने–समझाने के लिए प्रायः नये शब्दों का निर्माण कर लिया जाता है। इन शब्दों की समीचीन व्याख्या और उनके समतुल्य हिन्दी शब्द बनाने की आवश्यकता होती है। व्यवहार में प्रयोग से ही नये शब्द चलन में आते हैं। तकनीकी क्षेत्र में आवश्यक है कि उच्च स्तरीय विज्ञान–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हिन्दी में होना चाहिए। भौतिकी, रसायन, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रानिकी, इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, प्रबंधन विज्ञान आदि में यह पाठ्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों का निर्माण करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसकी भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट एवं असंदिग्ध हो। यह अपनी भाषा की उच्चारण प्रकृति तथा व्याकरण के नियमों के भी अनुकूल हो। इसमें समान संकल्पना के लिए समान शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह का इस प्रकार के शब्द निर्माण की भाषा पर प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होना चाहिए, अन्यथा शब्द क्लिष्ट होकर रह जायेगें एवं यह अनुप्रयोग की दृष्टि से निरर्थक सिद्ध होगें।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द निर्माण के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है – अनुवादक का दोनों भाषाओं पर अधिकार, वैज्ञानिक भाषा की सरलता एवं स्पष्टता, पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली, विदेशी भाषाओं के प्रयोग, विदेषी शब्दों का हिन्दी उच्चारण के अनुरूप ढालना, वैज्ञानिक शब्दों के हिन्दी पर्याय और वैज्ञानिक शब्दों का लिप्यंतरण।

आज हिन्दी में तकनीकी शब्द निर्माण के क्षेत्र में अनेक मत प्रचलित हो गए हैं, जैसे एक मत यह है कि जिन नवागत ज्ञान–विज्ञानों के शब्द हिन्दी में पहले से मौजूद नहीं हैं, वे पारिभाषिक शब्द हिन्दी में यथावत् ग्रहण कर लिए जाऍं। ऐसा हुआ भी है, लंबाई की नाप का पारिभाशिक शब्द ''मीटर'', द्रव मात्रा की नाप का पारिभाषिक शब्द ''लीटर'' ग्रहण कर लिया गया है। ऐसा जरूरी भी नहीं है कि अंग्रेजी के शब्दों का रूप ही हमेशा प्रचलित हो, जैसे कि ''रजिस्टर्ड'' के लिए ''रजिस्ट्रीकृत'' एवं ''पंजीकृत'' दो शब्द प्रस्तुत किये गये, किंतु पंजीकृत अधिक प्रचलित हुआ। अतः कुछ नव निर्मित शब्द ऐसे भी होते हैं, हो सकते हैं जो कि किसी दूसरी भाषा से आगत पारिभाषिक शब्दों के समकक्ष अर्थ को अपनी भाषा में और भी ज्यादा खूबसूरती से व्यक्त करें। ''टाइपिस्ट'' के लिए ''टंकक'' कोर्ट के लिए ''न्यायालय, ''कमिश्नर के लिए ''आयुक्त'' पारिभाषिक शब्द बने और खूब चल रहे हैं। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि शुद्धता प्रवृत्ति के आग्रह से प्रभावित होकर ऐसे पारिभाषिक शब्द गढ़ना जो मूल भाषा के पारिभाषिक शब्द के अर्थ की आत्मा को व्यक्त न कर सके, उचित नहीं होता।

एक अन्य मत यह भी है लोक प्रचलित देशज शब्दों से दूसरी भाषा से आगत शब्दों के स्थान पर पारिभाषिक शब्द बनाये जायें किंतु प्रोद्योगिकी एवं तकनीकी शब्दों को चरितार्थ करने वाले देशज शब्दों की कमी इस मत की मान्यता को थोड़ा कमजोर करता है।

निष्कर्षतः भारत विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, बोलियों को सदा से अपने में समाहित करता रहा है, इसलिए ज्ञान–विज्ञान के नित–नये क्षेत्रों से आगत शब्दों को अपने परिवेश में गढ़ने में हम सदा ही तत्पर रहेगें, ऐसी आशा एवं विश्वास है। प्राचीन भाषा, लोकभाषा, प्रांतीय भाषा इत्यादि के सहारे हम इन चुनौतियों में अवश्य सफल होगे, यदि नया शब्द प्रचलित नहीं होता तो उसे उसी रूप में ग्रहण करने या उच्चारित करने में संकोच नहीं होना चाहिए।

संदर्भ–ग्रंथ एवं पत्र पत्रिकाऍं :–

1 –प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ.विनय दुबे (संयोजक), म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2 –भाषा चिन्तन, डॉ.भोलानाथ तिवारी, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद।
3 –शब्दों का जीवन, डॉ.भोलानाथ तिवारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4 –हिन्दी शब्दानुशासन, पं. किशोरीदास वाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा कांशी।
5 –राष्ट्रभाषा–सन्देश, विभुति मिश्र, अंक 3, 24, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
6 –हरिभूमि, जबलपुर, 14 सितम्बर 2012
7 –पत्रिका, जबलपुर, 14 सितम्बर 2012